नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उत्तरी दिल्ली) की
दिनांक 09 जुलाई, 2026 को आयोजित वर्ष 2026 की प्रथम छमाही बैठक के कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), उत्तरी दिल्ली की 14वीं एवं वर्ष 2026 की प्रथम छमाही बैठक डॉ. त्रिलोचन महापात्र, अध्यक्ष नराकास, उत्तरी दिल्ली और पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में दिनांक 09 जुलाई, 2026 को पूर्वाह्न 10:30 बजे से ए.पी. शिंदे

संगोष्ठी कक्ष, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली-110012 में सम्पन्न हुई। मंच पर उपस्थित गणमान्य डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, डॉ. रामचरण भट्टाचार्य, निदेशक, राष्ट्रीय पादप जैव प्रोद्योगिकी अनुसंधान, नई दिल्ली, डॉ. एन. राजेश पिल्लै, निदेशक, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली, डॉ. सुमंत मुखर्जी, कार्यकारी निदेशक, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली, प्रो. (डॉ.) अजय कुमार शर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली और डॉ. कैरम नरसैया, निदेशक, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संसाधन, नई दिल्ली एवं बैठक में विभिन्न कार्यालयों से आए 144 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिए जिसमें कार्यालय प्रमुख तथा हिन्दी अधिकारी शामिल रहें। कार्यक्रम का भव्य शुभारंभ मंचासीन गणमान्यों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया, जो अंधकार से प्रकाश की ओर अर्थात् अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने का संदेश देता है।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह पिलानिया, सदस्य सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), उत्तरी दिल्ली एवं पौधा किस्म परीक्षक, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा स्वागत भाषण के माध्यम से बैठक का आरम्भ हुआ, उन्होंने मंचासीन गणमान्य अतिथियों एवं बैठक में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत

त्रि. महापात्र

एवं आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2015 में नराकास उत्तरी दिल्ली का गठन किया गया तथा वर्ष 2017 में यह उत्तरदायित्व पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण को दिया गया। तभी से नराकास उत्तरी दिल्ली अच्छा कार्य कर रहा है। वर्ष 2023 से नराकास उत्तरी दिल्ली के कार्यों में बहुत अधिक तेजी देखने को मिली है। वर्ष में होने वाली बैठकों को आयोजित किया गया तथा कार्यक्रम में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए सभी मार्ग दर्शन बताए गए। अध्यक्ष महोदय के निर्देशन में सभी सदस्य कार्यालयों से दिए गए सहयोग व सुझाव से नराकास, उत्तरी दिल्ली प्रगति की ओर अग्रसर है।

डॉ. धर्मेन्द्र सिंह पिलानिया, सदस्य सचिव ने बैठक में सभी सदस्यों कार्यालयों को अवगत कराया कि वर्तमान में 74 कार्यालय नराकास उत्तरी दिल्ली के सदस्य कार्यालय हैं। राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नराकास उत्तरी दिल्ली का विभाजन कर दिया गया है तथा नराकास उत्तरी दिल्ली-2 के रूप में एक नयी नराकास स्थापित की गई है। जिसके अनुसार 48 कार्यालय पौधा किस्म और कृषक अधिकार प्राधिकरण, नराकास उत्तरी दिल्ली के सदस्य बने रहेंगे, जबकि शेष कार्यालयों को कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल, नराकास उत्तरी दिल्ली- 2 के सदस्य रहेंगे ।

अपने भाषण में उन्होंने बताया कि हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए आंतरिक समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल के भी समय समय पर दिशानिर्देश मिलते रहते है तथा हिन्दी के कार्य में प्रगति हेतु कार्यशालाओं के आयोजन के लिए भी सुझाव दिया गया है।

श्री अशोक कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) ने बैठक में उपस्थित सभी सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट की समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने विभिन्न कार्यालयों द्वारा किए जा रहे हिन्दी कार्यों की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला तथा उन कार्यालयों का उल्लेख किया जहां हिन्दी अधिनियमों के पालन में कमी देखी गयी तथा जिन कार्यालय से रिपोर्ट प्राप्त ही नही हुई। इसके साथ ही उन्होंने सभी कार्यालयों को राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) और नियम 5 का अनुपालन करने का आग्रह किया।

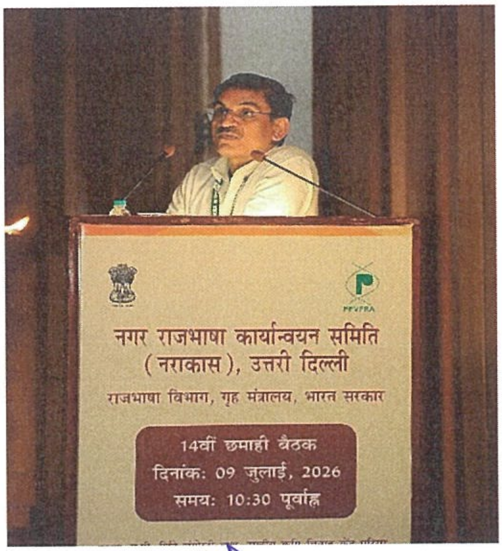

लि- सहायक

डॉ. कैरम नरसैया, निदेशक, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संसाधन, नई दिल्ली ने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर से ही हिन्दी के प्रति रुचि विकसित करने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिन्दी के प्रयोग के प्रति प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सकारात्मक दृष्टिकोण राजभाषा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे।

डॉ. रामचरण भट्टाचार्य, निदेशक, राष्ट्रीय पादप जैव प्रोद्योगिकी अनुसंधान, नई दिल्ली ने सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में दिखाई गई उत्साहपूर्ण भागीदारी की सराहना की तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में हुई सकारात्मक प्रगति की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि भारत भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता से समृद्ध देश है, जो हमारे लिए गर्व का विषय है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि एक समान राजभाषा देश में संचार को सुदृढ़ करने, राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने तथा नागरिकों के बीच आपसी जुड़ाव की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र से अपने जुड़ाव का उल्लेख करते हुए उन्होंने वैज्ञानिक ज्ञान को हिन्दी में उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल दिया।

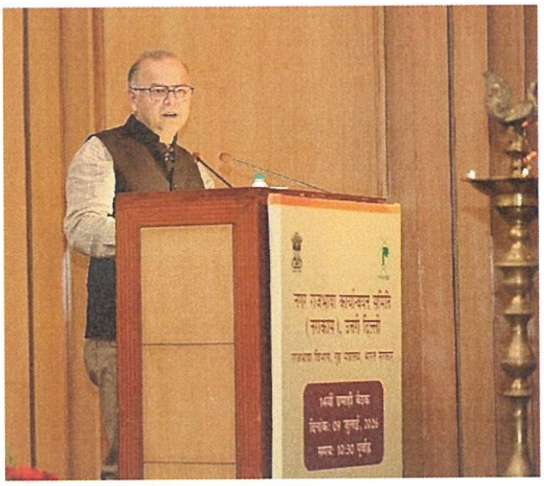

डॉ. एन. राजेश पिल्लै, निदेशक, वैज्ञानिक विश्लेषण समूह, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली ने कहा कि नराकास अच्छा कार्य कर रहा है । राजभाषा हिन्दी का संवर्धन सभी सरकारी संगठनों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे सकारात्मक भावना के साथ हिन्दी का प्रयोग अपनाएं और राजभाषा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति में सक्रिय योगदान दें।

नि. महापात्र

डॉ. सुमंत मुखर्जी, कार्यकारी निदेशक, पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली ने सदस्य कार्यालयों द्वारा सरकारी कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने बताया कि राजभाषा नीति के अंतर्गत हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए डीआरडीओ को ट्रॉफी प्राप्त हुई, जो उनकी उल्लेखनीय उपलब्धि का प्रमाण है। उन्होंने नराकास उत्तरी दिल्ली के अध्यक्ष महोदय जी को बधाई देते हुए कहा कि नराकास तीव्र गति से हिन्दी को बढ़ावा दे रही है और नराकास के सभी सदस्य कार्यालय अध्यक्ष नराकास के सानिध्य में खुश है।

प्रो. (डॉ.) अजय कुमार शर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली ने भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को हिन्दी के माध्यम से प्रसारित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि पाठ्यपुस्तकों एवं अन्य शैक्षणिक संसाधनों को अधिकाधिक हिन्दी में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली में आधिकारिक दस्तावेज हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाते हैं, जिससे द्विभाषिक प्रशासन को बढ़ावा मिलता है। नराकास उत्तरी दिल्ली द्वारा किए जा रहे कार्यों की भी प्रशंसा की।

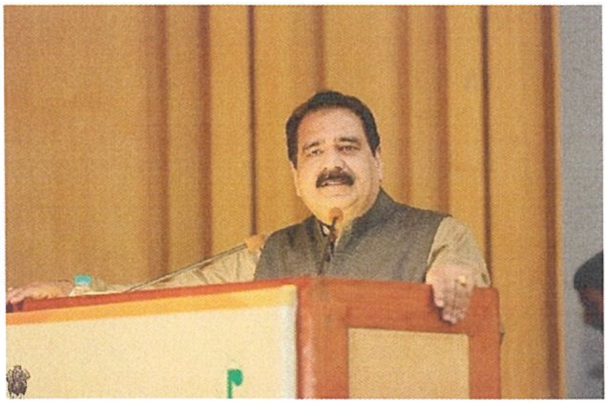

डॉ. दिनेश कुमार अग्रवाल, रजिस्ट्रार जनरल, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा विभिन्न देशों के उदाहरणों का उल्लेख करते हुए कहा कि अनेक सरकारें अपनी राष्ट्रीय भाषाओं को प्रशासनिक कार्यों में सक्रिय रूप से प्रोत्साहित करती हैं। उन्होंने कहा कि शासन-प्रशासन में हिन्दी का अधिक प्रयोग संचार को सुदृढ़ करेगा, लेन-देन की लागत को कम करेगा तथा आम नागरिकों के लिए सरकारी सेवाओं को अधिक सुलभ बनाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि वर्तमान में अनेक डिजिटल उपकरण एवं अनुप्रयोग

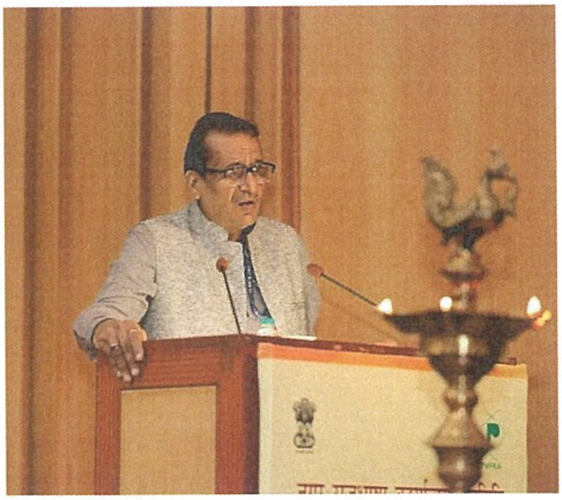

उपलब्ध हैं, जो कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को सरल बनाते हैं। उन्होंने अपने भाषण में अध्यक्ष नराकास को बधाई देते हुए कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्र से न होते हुए भी डॉ. त्रिलोचन महापात्र के पास हिन्दी के समझ तथा ज्ञान का भंडार है और उनके द्वारा नराकास के लिए किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा एवं सराहना की।

नराकास उत्तरी दिल्ली की **"वर्तिका"** नामक वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया गया। जिसमें नराकास उत्तरी दिल्ली एवं सदस्यों कार्यालयों द्वारा भेजे गये कार्यालय का संक्षिप्त में परिचय और गतिविधिओं का सारांश दिया गया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय पादप जैव प्रोद्योगिकी अनुसंधान, नई दिल्ली द्वारा की गई हिन्दी प्रकाशन **"वंशाणु"** का लोकार्पण किया गया, जिसका उद्देश्य हिन्दी पाठकों में जैव प्रौद्योगिकी की समझ को बढ़ाना है।

त्रि. महापात्र

खुली चर्चा व विचार विमर्श के दौरान कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिन्दी में अपने संदेह दूर करने के लिए मंच पर उपस्थित अधिकारियों से खुली चर्चा व सुझाव व्यक्त किए, जो निम्नवत है:

- सुश्री नंदिनी पुरोहित, कनिष्ठ अनुवादक द्वारा सुझाव माँगा गया कि संस्थान में सांस्कृतिक कार्यक्रम व सम्मलेन आदि में भाषण हिन्दी में दिया जाता है तो यह काम कहाँ दिखाया जा सकता है। क्योंकि ये भी तो एक माध्यम है हिन्दी को बढ़ावा दिए जाने का। इस पर स्पष्ट किया गया कि मूल्यांकन के लिए केवल आधिकारिक दस्तावेज जैसे पत्र, प्रतिवेदन, कार्यालय आदेश, निविदाएँ, नियमावलियाँ एवं अन्य निर्धारित अभिलेख ही मान्य होंगे।
- श्री अजय यादव ने सुझाव दिया कि सदस्य कार्यालयों द्वारा प्रस्तुत कार्य-सारांश बैठक से कम-से-कम दो दिन पूर्व साझा या अपलोड कर दिया जाए, ताकि सहभागी कार्यालयों को जानकारी का सत्यापन करने तथा आवश्यक संशोधन अथवा परिवर्धन करने का पर्याप्त समय मिल सके।
- प्रतिभागियों ने हिन्दी के प्रति रुचि बढ़ाने और राजभाषा के प्रचार-प्रसार को और सुदृढ़ करने के लिए कवि सम्मेलन जैसे साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन का भी सुझाव दिया।

डॉ. त्रिलोचन महापात्र, अध्यक्ष, नराकास, उत्तरी दिल्ली और पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्राधिकरण तथा सदस्य कार्यालयों के कार्यकलापों में राजभाषा हिन्दी के प्रगतिशील प्रयोग के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर उन्होंने नराकास उत्तरी दिल्ली द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका **"वार्तिका"** के लिए संपादकीय मंडल तथा हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी के प्रसार हेतु किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। माननीय अध्यक्ष महोदय द्वारा सदस्य सचिव नराकास उत्तरी दिल्ली की सराहना करते हुए कहा कि हिन्दी में रूचि तथा सभी सदस्यों कार्यालयों के साथ सही तालमेल किया गया तथा आयोजित की गई सफल बैठक के लिए बधाई दी।

त्रि. महापात्र

अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को अवगत कराया कि मंत्रालय के निर्देशानुसार सदस्य कार्यालयों को दो समूहों में विभाजित किया गया है, जिनमें से 48 सदस्य कार्यालयों का समन्वय एवं राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा का दायित्व पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण को सौंपा गया है।

उन्होंने निर्देश दिया कि सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष दो अर्द्धवार्षिक छमाही बैठकें आयोजित की जाएँ जिससे नियमित समीक्षा एवं संवाद से राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन को और अधिक सुदृढ़ बनाया जा सकेगा।

अध्यक्ष महोदय ने यह भी अवगत कराया कि वर्तमान बैठक में राजभाषा पुरस्कार प्रदान नहीं किए जा रहे हैं। तथापि, राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सदस्य कार्यालयों को अगली छमाही बैठक में सम्मानित किया जाएगा, ताकि अन्य कार्यालय भी राजभाषा के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित हों।

बैठक की अवधि का उल्लेख करते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि वर्तमान बैठक आधे दिन की अवधि के लिए आयोजित की गई है। उन्होंने सुझाव दिया कि भविष्य में इन समीक्षा बैठकों का आयोजन पूर्ण दिवस के लिए किया जाए, ताकि सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की जा सके और ऐसी बैठकों में काव्य पाठ तथा अन्य हिन्दी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा सकता है, जिससे सदस्य कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग एवं प्रचार-प्रसार को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।

बैठक के दौरान विचार-विमर्श के पश्चात निम्नलिखित बिन्दुओं पर कार्यवाही सुनिश्चित की जाए :

1. सभी सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों का भारत सरकार के दिशानिर्देशो का पालन करते हुए बैठक में भाग लेना अनिवार्य है।
2. सभी सदस्यों कार्यालयों जिनमें कोई न कोई कमी है, उन कमियों पर ध्यान देना चाहिए और आवशयक कार्यवाही की जानी चाहिए।
3. नराकास उत्तरी दिल्ली- 1 के अधीन अब से 48 सदस्य कार्यालय होंगे। कोई भी सदस्य कार्यालय यदि अपना अध्यक्षीय कार्यालय बदलना चाहें तो उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन- 1 (दिल्ली), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, त्रिकूट-II, तृतीय तल, भीकाजी कामा प्लेस, आर.के.पुरम, नई दिल्ली- 110066 के साथ पत्राचार करें और इसकी सूचना प्रति हमें अवश्य प्रेषित करें।
4. नराकास उत्तरी दिल्ली- 1 की अगली छमाही बैठक नवम्बर-दिसम्बर, 2026 के दौरान आयोजित की जाएं।

ह० महापात्र,

5. अगली बैठक पूर्णदिवसीय आयोजित की जाएं। कार्यक्रम में कुछ प्रतियोगिताएं, कवि-सम्मेलन, प्रस्तुतियां और सर्वश्रेष्ठ संस्थान पुरस्कार आदि शामिल किए जाएं।
6. सभी सदस्य कार्यालयों को वार्षिक पत्रिका 'वर्तिका' की मुद्रित प्रतियाँ प्रेषित की जाएं। इस पत्रिका का प्रकाशन प्रत्येक वर्ष किया जाएं।
7. समीक्षा रिपोर्ट की प्रस्तुति प्रत्येक सदस्य कार्यालयों को प्रेषित की जाएं जिससे यदि आवश्यक हों तो जरुरी संशोधन बैठक से पूर्व किए जा सकें।

श्री जय नारायण उपाध्याय, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला द्वारा अध्यक्ष, नराकास उत्तरी दिल्ली को बधाई देते हुए बताया गया कि उनकी अध्यक्षता में नराकास में जिन ऊंचाईयों को छुआ है वह सराहनीय है। उन्होंने मंचासीन सभी गणमान्य अतिथियों का हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा कि सभी के सहयोग से बैठक में अधिकाधिक सदस्यों कार्यालयों द्वारा भाग लिया गया तथा सदस्य सचिव नराकास द्वारा बैठक में किए गए प्रबंध को भी सराहा। उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि नराकास अच्छा कार्य कर रही है जो कि सभी सदस्य कार्यालयों का मिलाजुला निष्कर्ष है। अंत में उन्होंने बताया कि नराकास और अच्छा करेगी और इसी तरह आगे बढती रहेगी इसी वक्तव्य के साथ में अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

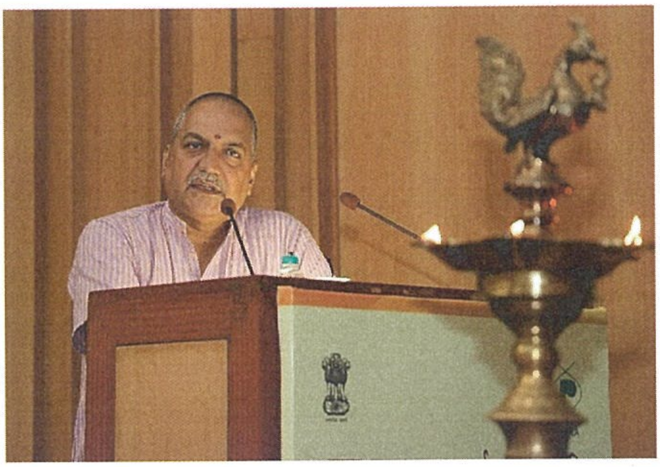

॥ जय हिन्द जय भारत ॥

ह०/- सहपात्र